ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

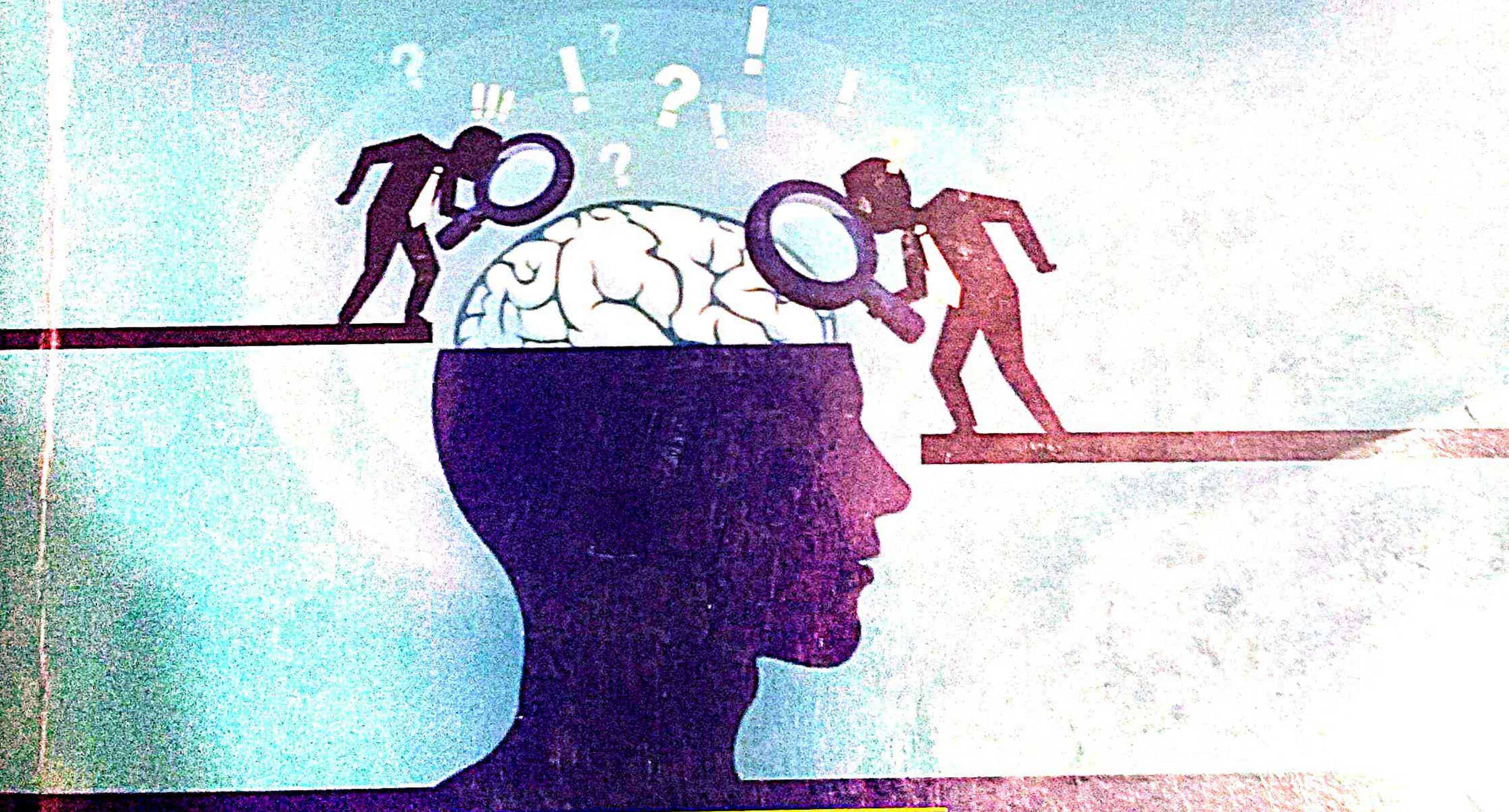

IMPACT FACTOR : 5.051

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

For Publication Contact us
E-mail-editorialindia1@gmail.com
delhijournals1@gmail.com
Mob-8791628959,9472628959

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

For Publication Contact us
E-mail-editorialindia1@gmail.com
delhijournals1@gmail.com
Mob-8791628959,9472626969

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com
©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० मंजू शर्मा; मधु देवी	1072
वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन–प्रो० देवेंद्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी	1078
हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह	1081
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति–अच्युत कुमार यादव	1084
असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)–दिगंत बोरा	1090
असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ–डॉ० आकाश वर्मा	1094
कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयों में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग–डॉ० संजय डी० रायबोले	1098
असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य–डॉ० परिस्मिता बरदलै	1101
भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–डॉ० आकाश वर्मा	1104
"स्माल सिनेमा" बनाम "मालेगांव का सिनेमा"–डॉ० मनीष कुमार मिश्रा	1110
विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मों की भूमिका–डॉ० सुनिता कुमारी	1115
दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन–बबली कुमारी	1118
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका–देवेन्दु आलोक	1122
चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन–धीरज कुमार	1126
रवीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव–गुड्डू कुमार सिंह; डॉ० अलका कुमारी	1131
भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक–डॉ० श्री कमलजी	1138
बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह	1140
नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व–प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल	1146
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना–डॉ० महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी	1151
बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान–डॉ० मनोज कुमार	1154
गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरूद्ध निर्णायक शस्त्र–निवेदिता कुमारी	1158
मुगल काल में इतिहास लेखन–डॉ० राघवेन्द्र यादव	1162
प्राचीन विहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन–राहुल कुमार झा	1165
विहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि–सचिन कुमार	1169
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां–संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय	1173
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–तौकीर आलम	1177
प्राचीन विहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ–डॉ० संजीव	1181
''जनहित याचिका'' मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन–दीपक कुमार कोठरीवाल	1183
प्रगतिशील आंदोलन की जागृति–डॉ० आशा तिवारी ओझा	1186
भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान–डॉ० सीमा सहदेव	1189
भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस का (कोविद-19) प्रभाव–श्रीमती मीनाक्षी	1195
रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण–अक्षय राज	1201
जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी–डॉ० अनामिका तिवारी; डॉ० संजय कुमार सिंह	1205
छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण–आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ० (प्रो०) जे० के० पटेल	1210
अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष सन्दर्भ में–प्रो० प्रभात कुमार; कल्पना देवी	1216
पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन–डॉ० प्रशान्त कुमार; डॉ० दुर्वेश कुमार	1221
रीति काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास–सोमबीर	1227
कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सुशीला; कु० आरती	1230
भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता–डॉ० जगबीर सिंह	1238
भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या–मुकेश देशवाल	1241
भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना–सूर्यभान सिंह	1244
अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)–जितेश कुमार घोरेठा; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	1250

नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व

प्रोफेसर लता सुमन्त

शोध निर्देशिका, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

राजेश कुमार पटेल

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

सार - किसी साहित्यकार के साहित्य का अनुशलीन के पहले उसके व्यक्तिगत जीवन, स्वभाव एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना अत्यन्त आवश्य क्योंकि ये व्यक्तिगत विशेषताएं उसकी कृतियों को समझने में विशेष सहायक होती है। कृतिकार साहित्य निर्माण में आवश्यक सामग्री जगत् और जीव ग्रहन करता है, पर अपनी कृतियों पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप डाले बिना नहीं रह सकता। साठोत्तर काल में कथाकारों की रचना दृष्टि पुर्णतः न है। कथ्य के प्रगति दृष्टिकोण बदल कर मानव सम्बन्धों की सार्थक व्याख्या करने वाली अनेक महिला साहित्यकारों में नासिरा शर्मा का स्थान महत्वपूर्ण

मुख्य शब्द- प्रगति दृष्टिकोण, आंतरिक व्यक्तित्व, बाहय व्यक्तित्व.

1.1 प्रस्तावना

नासिराजी का साहित्य पाठक को प्रेरित करने की क्षमता रखता है। वें गहन अध्ययन की धनी समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का ध्यान रखते हुए उ लेखन कार्य किया है। नासिरा शर्मा के कथा साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ करने पर उनकी मार्मिकता, गहन एवं सूक्ष्म दृष्टि का ज्ञान होता है। वस्तुतः स्थान उत्तरशती के हिन्दी कथासाहित्य में अनेक नवीन साहित्यिक अवधारणाओं की स्थापना मे अमूल्य योगदान देती है। कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, सूर्यबा माणिक मोहनी, मंजुल भगत, शुभा वर्मा, रजी सेठ, निरूपमा सेवती, चित्रा मुदगल, दीप्ति खंडेलवाल, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा जैसे महिला साहित्यकार एक नयेपन से एक नया जीवनबोध लिया है। जिसके कारण परिवेश, घटना एवं विधा आदि सब कुछ नये सिरे से कलात्मक स्तर उठाये जाकर एका का प्रभाव छोड़ते है। नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व उदात्त है। व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द परसानेलीटी का पर्यायी है। व्यक्तित्व को व्यक्त करतु हुए कोशकार मन्तव्य है, कि ''व्यक्ति का गुण या भाव वे विशेष गुण जिनके द्वारा किसी व्यक्ति की और स्वंतन्त्रता सत्ता सुचित होती है।''

आ0 क्षेमचन्द्र के अनुसार ''व्यक्तित्व वह होता है जिसमें गुणों का समुच्चय हैं जो एक व्यक्ति का अन्य व्यक्तियों से अलग कर दिखाता है।''

व्यक्त्वि में आंतरिक तत्व महत्वपूर्ण है। बाहयतत्व व्यक्तित्व की दृष्अि से सहायक है। बाहय लक्षण ही व्यक्तित्व नहीं होता इसलिए वे आंशिक रूप ही सत्य माने जा सकते है। उपर्युक्त विचारों के आधार पर कहा जा सकता है, कि मनुष्य विशेष का बाहय व्यक्तित्व जो प्रत्यक्ष है। जिसमें शारीरिक रहन-सहन को समन्वित देखा जा सकता है। केवल वह व्यक्त्वि का एक अंग है। इस बाहय व्यक्तित्व के अनुभव, अनुभूति, बोध, विचार, निर्णय, वि मनुष्य को आंतरिक व्यक्तित्व को प्रकाशित करने है और यही मनुष्य व्यक्तित्व का निर्माण एवं विकास करते हैं।

सामान्यतः मनुष्य व्यक्ति के दो पक्ष दृष्टव्य हैं।

1. आंतरिक व्यक्तित्व।
2. बाहय व्यक्तित्व।

1.2 आंतरिक व्यक्ति

नासिरा शर्मा के साहित्य का अध्ययन करने पर और साक्षात्मकार के अनेक नमुनों के आधार पर उनके आंतरिक को जानने का प्रयास किया है। इ उनकी विचार धारा तथा उनके द्वारा सम्पन्न हो रहे क्रियाकलापों से वार्तालाप से जाना गया है। नासिरा शर्मा का स्वभाव धीर गंभीर एवं शान्त है। चिन्तन-म करने की प्रवृत्ति उनमें है। पत्रकारिता से समाजसेवा को वे अपना कर्तव्य मानती है। उन्होंने अनेक ज्वलंत समस्याओं पर विचार मंथन करके समाज का पथ किया हैं, वे अपना समय अच्छी तरह से प्रयोग में लाती हैं। अपना कीमती समय कभी व्यर्थ नहीं गंवाती। वह न तो किसी पार्टी में जाती, न शॉपिंग, न कि के घर जाती है और न उन्हें गॉसिप का शौक हैं। वह अपना समय साहित्य कार्य को देती हैं। उन्हीं के शब्दों में... ''जब कुछ लिखने बैठती हूँ तो उ पूरी डूबी जाती हूँ उससे बड़ी मुश्किल से बाहर निकल पाती हूँ।'' नासिरा जी का कथा साहित्य भारतीय इतिहास ओर संस्कृति में मानवीय अस्मिता को तल करते नजर आते हैं। नासिरा शर्मा अपने अंतर्गत व्यक्तित्व की व्याख्या ''मेरे व्यक्तित्व की कुंजी मेरे पास थी जिसके दरवाजे पर मजबूत ताला डाल रखा हर दस्तक पर मैं चौंकती जरूर थी मगर उठकर दरवाजा खोलने की ख्वाहिश कभी नहीं हुइ। रास्ते में पडे कंकड या खाली डिब्बे से दूर तक बेमकसद

...उनकी आदत होती है और मैं किसी की आदत के लपेट में आना नहीं चाहती थी। अपने को संभालकर रखने की कला मुझे उस एहसास ने दी थी ...शीशे की दीवार हूँ जरासे झटके से दरक जाऊँगी।

...प्राकृतिक सौंदर्य का आस्वाद लेना, नई-नई जगहों में घुमना, ''मेरी ईरान पर लिखी चंद्र कहानियाँ उन यात्राओं की उपलब्धियाँ हैं जो मैंने पिछले चार ...साल मेंक की है सूफी दर्शन से ओतप्रोत लेखिका के लिए अपना पराया कुछ न था बस जो मेरे दिल और दिमाग ने देखा समझा और महसूस किया वह ...कागज पर ढलकर कहानी बन गया इस तलाश में सीमा का ध्यान न रहा सच्चाई भी यही है कि न मैं सीमा रेखाओं को पहचानती हूँ न ही मेरा विश्वास ...जीवन में जुड़ी राजनीति से मार खाई हुई फिल्में देखना उन्हें पसन्द है। उनके विचार प्रगतिशील हैं, वे मनुष्यता का धर्म साम्प्रदायिक या संकीर्ण विचारधाराओं ...उपर मानती है। उनका वह प्रगतिवादी रूप उनके जीवन में एवं साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। उन्हें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, समकालीन स्थितियों ...भलि-भाँति परिचय हैं उसी का वर्णन उनके साहित्य में प्रतिबिंबित होता है। मुस्लिम धर्म में मुस्लिम स्त्री के जीवन के अनेक आयामों को खोलकर उनकी ...समस्याओं को उजागर किया है।

...3 बाहय व्यक्तित्व

...कोई व्यक्ति बाहय कैसे दिखता है। जैसे व्यक्ति का शरीर, रंग, रहन-सहन आदि नासिरा शर्मा सुदृढ शरीर से सम्पन्न गौर वर्णिय ऊँचे कद की धनी है। ...का बाहय व्यक्तित्व प्रभावशाली है। वे मृदुभाषी, मित्तभाषी होने के साथ ही शान्त प्रकृति स्वभाव रखती है, उन्हें साड़ी पहनना पसंद है। अन्य स्त्रियों की ...वह गहनें या चुड़ियाँ नहीं पहनती। वे कहती है ''चुडियाँ पहनकर लेखनकार्य करने में दिक्कत होती है। चुडियाँ पहनना आवश्यक नहीं है।'' अनेकानेक ...स्कारों से सम्मनित नासिराजी नारी अस्मिता की सश्क्त पक्षधर हैं। उनके साहित्य में रस-रंग, रोमानी आर्द्रता खुबसूरती के अलग-अलग आयाम चिंतन, ...सुविधा, दुख-सुख आदि के साथ पात्रों को अंतरंग और बहिरंग छवियाँ अनेक शेडस के साथ जीवन हो उठती हैं उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का सबसे ...बसुरती से प्यार है। चाहे वह औरत की खुबसूरती हो या मन की प्रमिल अनुभूतियों की चाहे व्यवहार व शिष्टाचार की करत हो अथवा प्रकृति का नैसिर्गिक ...नन्द हो फुल, वृक्ष, नदी, झरने, समंदर, पहाड, जंगल सभी तो उनकी आँखों में समाए हैं। उनके पात्र फूलों से पेड़ों से समंदर से बातें करते हैं। उनकी ...की विशेषता है कि वे अपनी रचनाओं से ज्यादा छेड़छाड पसंद नहीं करती। उन्होंने जो मकसद जो उद्देश्य जो आत्मा किसी रचना को दी है। वह हर ...में सही सलामत होना चाहिए। उनके साहित्य में गुंगा समुनी संस्कृति का अदभुत संगम हैं जितने जींवत उनके हिन्दू पात्र परिवेश और बोली बानी है। ...य के बदलते माहौल नए युग संदर्भ नए स्वप्न और इर्न चुनौतियाँ उपजती हैं। समय के साथ उपजने वाले सवालों में रचनाकार अपने पात्रों के माध्यम से ...ढता है और मानव मन की अंतर्वती पतों से उसमें से नए रास्ते तलाशता है। नासिरा शर्मा जी का बहिरंग व्यक्तित्व जितना सुंदर आकर्षक उतना ही कोमल ...वेदनशील तथा भावुक दृष्टिगोचर होता है, इसलिए जीवन के इस मोड पर आकर वे अपने बचपन को याद करती है। उन्हें अपने माता-पिता, भाई-बहन ...घर अधिक भाता है, बीते दिन फिर नहीं आते नासिरा शर्मा व्यक्तित्व कुल मिलाकर प्रभावशाली, आकर्षक एवं धीर गंभीर प्रतीत होता है। नासिराजी के ...क्तित्व निर्माण में उनका परिवार परिवेश तथा उनके अपनी सोच जो वे जीवन के प्रति स्पष्टता से रखती है इन सभी का प्रभाव रहा है।

...4 जीवनवृत्त

...4.1 जन्म एवं बचपन

नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त सन 1948 को इलाहाबाद उत्तर प्रदेश शहर में हुआ। परिवार में सबसे छोटी संतान होने के कारण नासिरा जी का बचपन ...र लाड-प्यार से गुजरा नासिरा जब सात वर्ष की आयु की थी, तभी उनके पिता का देहावसान हो गया। उसके बाद उनका बचपन अनेक संघर्षों में बिता। ...की मृत्यु के उपरान्त परिवार की बागडोर माता ने अपने हाथों में ले ली। अपनी संतान को किसी प्रकार से पिता की कमी महसूस नहीं होने दी। परिवार ...सभी जिम्मेदारियाँ उनकी माता नाजनीन बेगम ने बड़ी कुशलता से निभाई। नासिरा जी बचपन से ही वैचारिक प्रवृत्ति की रही हैं, किसी गुढ़ गंभीर विषय ...चिंतन, मनन करना उनकी प्रकृत्ति हैं।नासिरा शर्मा का परिवार प्रतिभा संपन्न सुसंस्कृत रहा है। ये कुल मिलाकर पाँच भाई बहन है। भाई बहनों में सबसे ...छोटी होने से परिवार में सबकी लाड़ली बेटी थी। उन्हें सभी से प्यार मिलता था, किन्तु केवल सात वर्ष की आयु में उनके पिता का देहान्त हुआ। दुख से ...परिवार संघर्षों की संघर्षों की खाई में गिरा था, किन्तु उनकी माँ नाजनीन बेगम ने खुद को संभालकर धैये से अपने बच्चों की जिम्मेदारी तथा परवरिश ...नासिराजी का दृष्टिकोण विशाल और दृढ होता गया। नासिरा शर्मा का वैवाहिक परिवार भी अच्छा रहा है। उनका परिवार सर्वधर्म समीाव का प्रतीक है, ...कि उनकी पुत्रवधु इसाई तो दामाद मुस्लिम है सभी खुश है।

...4.2 शिक्षा-दिक्षा

नासिरा जी के पिता के मृत्यु के बाद वह और उनकी तीनों बहनों को एक ही स्कूल में डाल दिया था। स्कूल के सभी टीचरें विभिन्न धर्मों की थो। ...पर सभी छात्राएँ एक ही धर्म को मानने वाली थी, किन्तु बाद में नासिर जी ने महसूस किया कि इन टिचरों ने बिना किसी प्रचार प्रसार के हमें शिक्षा ...साथ एक मानसिक सुरक्षा का विश्वास दिया, जिसमें इन्सानी सम्बन्ध पर जोर था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से सन् 1967 में स्नात्मक स्तर की ...प्राप्त की, दिल्ली ज्वाहरलाल विश्वविद्यालय से सन् 1976 में उन्होंने अंग्रेजी हिन्दी पश्तों उर्दु फारसी भाषाओं की पढ़ाई की। ईरानी, समाज, राजनीति, ...संस्कृति, साहित्य, कला विषयों की विशेषज्ञ रही है।

...4.3 विवाह

नासिरा शर्मा का विवाह मात्र उन्नीस वर्ष की आयु में अंतधर्मिय श्री रामचन्द्र शर्मा जी के साथ हुआ था। श्री रामचन्द्र शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में ...विषय के अध्यापक थे। तद् पश्चात वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली में अध्यापन कार्य करते रहें। नासिरा शर्मा और उनके पति के रिश्ते

को समाज द्वारा नकारा गया, उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा था। उनकी दृष्टि में लोग धर्म को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं, कि सबको चलाने और जीवन जीने का एक रास्ता है आज धर्म को समझना हमारे लिए बेहद जरूरी हो गया है, क्योंकि उसका गलत प्रयोग इन्सानी जिन्दगी बेहद दुश्वार बना रहा है।'' किसी भी धर्म में गलत प्रथाओं का वर्णन नहीं होता है। उस में आदर्शों को बुनियाद बना कर जीवन को स्वीकार कर चलना धर्म का उद्देश्य है, किन्तु कुछ लोग उसका गलत अर्थ निकालकर दूसरों को गलत राह दिखाने की साजिश करते हैं। उनका विवाह एक सफल विवाह रहा है, क्योंकि उनके उस संस्कार से उन्हें दो संतान प्राप्त हुई एक बेटा अनिल जो अपने व्यवसाय में व्यस्त है और एक बेटी अंजु जो अपने परिवार समेत नासिराजी की पड़ोसी है।

डॉ० सुषमा कोंडे के अनुसार ''युवा अवस्था तक आते-आते नासिरा जी की विचारधारा परंपरागत, रूढ़िवादी एवं पूर्वाग्रह विचारों से हटकर नया रूप ले चुकी थी। इस परिवर्तित विचारधारा का प्रमाण इनके अंतर्धार्मिक प्रेमविवाह से मिलता है। नासिराजी को विवाह के उपरान्त समाज में कई अनेक समस्या आई'' नासिराजी कहती है।

1.4.4 रूचियाँ

समाज में धर्म के नाम पर स्त्रियों पर जो अत्याचार होता है, नासिर जी उससे बेचैन हो उठती हैं अपने स्वीभाव के अनुसार अपनी भूमिका अपनी भाषा को बदल लेती है। जब साहित्यकार अपने सृजन से समाज को बदलने की अपेक्षा करता है, तो उसे प्रकृति का सहारा लेना पड़ता है। उसे प्रकृति अपने ओर आकर्षित करती है, इसलिए नासिरा जी भी उससे अछूती नहीं रही है। निसर्गसौंदर्य का आस्वाद प्राप्त करना अलग-अलग जगहों में घूमना वहाँ प्राकृतिक, सामाजिक तथा विभिन्न स्थितियों का परखना-समझना नासिरा जी का शौक रहा है। नासिराजी को मनुष्य जीवन से परिपूर्ण तथा वेदनाओं से जुड़ी घटनाओं से चित्रित फिल्में देखना अच्छा लगता है।

अपने लेखन कार्य में मुस्लिम धर्म और उससे सभी घटनाओं को विस्तारपूर्वक विशेष कलात्मकता के साथ अभिव्यक्त करना विभिन्न पात्रों, वेशभूषा, वातावरण एवं संवादों के साथ-साथ उद्देश्य की पूर्ति अपने कथा संग्रहों का महत्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत करना उनकी पसंद रही है। स्पष्ट है कि नासिराजी कोई साधारण महिला नहीं है, जो केवल अपने खाने-पीने, ओढ़ने, सजने-संवारने में कोई रूचि नहीं रखती है। एक खास व्यक्ति की अपनी खास रूचि होती है, जो वर्तमान समय की नितांत आवश्यकता है। नासिराजी को अपना घर सजाने में रूचि है। दूसरा शौक घर गृहस्थी है, बहनों की शादी के बाद घर की जिम्मेदारी नासिराजी के जिम्मे थी जिसे वे बखुबी से निभाती थी। घर आए मेहमानों की आवभगत करना वे खूब जानती है।

सिलाई और खाना बनाना भी अच्छा लगता है, छोटे बच्चों के साथ वक्त बिताना उनकी रूचि रही है। वह बाल भवन जाकर बच्चों से मिलती है, बच्चों को समझना उनसे बाते करना नासिराजी को सुख देता है। नासिरा शर्मा के कृतित्व में उसका प्रतिफलन हुआ है। उनकी सृजनधर्मिता विविध आयामी है। उन्होंने कहानी संग्रह, उपन्यास अन्य भाषिक साहित्य का अनुवाद, राजनीतिक विश्लेषणात्मक ग्रन्थ, लेख, रिपोर्ताज, बालसाहित्य, संपादन, नाटक, साक्षात्कार, फिल्म टी०वी० के लिए स्क्रिप्ट लेखन इ० विधाओं पर लेखन किया है। शोध के लिए नासिरा शर्मा का केवल कहानी संग्रह अध्ययन किया जा रहा है।

1.5 कहानी संग्रह

1. शामी कागज- ईरान की जीवन व्यवस्था पर आधारित सोलह कहानियों का संग्रह 1980.
2. पत्थर गली- भारतीय मुस्लिम पर आधारित आठ कहानियों का संग्रह 1986
3. संगसार- राजनैतिक अव्यवस्था से पीडित ईरानी समाज पर आधारित अठारह कहानियों का संग्रह 1993.
4. इब्ने मरियम- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक रंगभूमि पर आधारित तेरह कहानियों का संग्रह 1994.
5. खुदा की वापसी - भारतीय मुस्लिम महिला वर्ग के अधिकारों के हनन की नौ कहानियों का संग्रह 1994.
6. सबीना के चालीस चोर- भारत में होने वाले साम्प्रदायिक दंगों फसादों और निम्न वर्ग पर होने वाले शोषण की बारह कहानियों का संग्रह 1997.
7. इनसानी नसल- नागरिकों के टकराव और प्रेम पर आधारित तेरह कहानियों का संग्रह 2001.
8. दुसरा ताजमहल- सात लंबी कहानियों का संग्रह जिसकी सारी कहानियाँ अपने रंग की है। उनमें आपसी कोई अंतर्धारा नहीं बहती है यह इन्द्रधनुष ऐसे सात रंग है। जो साथ रहने पर भी अपना वजुद रखते है। 2002.
9. बुतखाना- सन् 2012 इस संग्रह में कुल 29 कहानियाँ है। जिसमें बारह लघुकथा है। नारी की जटिल मनोभूमि पर आधारित इन कहानियों में समाज के भिन्न-भिन्न नारी रूप चित्रित है। इसमें से प्रायः सभी प्रेमिका, पत्नी, मित्र, पड़ोसी आदि रूपों में किसी न किसी छल और प्रवंचना की शिकार है।

1.6 उपन्यास विधा

1. सात नदिया एक समन्दर- इरान की क्रान्ति पर लिखित उपन्यास 1984.
2. शाल्मली- भारतीय कामकाजी महिलाओं के जीवन एवं समस्याओं का चित्रण करने वाला उपन्यास 1987.
3. ठीकरे की मँगनी- भारतीय ग्रामीण महिला के जीवन के संघर्ष पर आधारित उपन्यास 1989.
4. जिन्दा मुहावरें- भारत में बँटवारे के बाद भारतीय मुस्लिम समाज के जीवन और समस्याओं को चित्रित करने वाला उपन्यास 1992.
5. अक्षयवट- इलाहाबाद शहर की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने इलाहाबाद शहर की सांस्कृतिक धरोहर पुलिस द्वारा होने वाला अत्याचार, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, युवा आक्रोश आदि मुद्दों को विशेष रूप उजागर किया है।

6. कुइयाजान- सन 2005 इस उपन्यास में नासिरा शर्मा ने वर्तमान समय में चल रही पानी की समस्या को उजागर किया है इस की पृष्ठभूमि इलाहाबाद शहर है।

1.7 अन्य कृतियाँ

1. इकोज ऑफ इरानियन रेवुल्यूशन- सईद, माडोया आदि कवियों द्वारा लिखित कृति कविताओं का फारसी, उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद 1979 इस ग्रन्थ में उन कविताओं का समावेश है, जिसमें इरान का सामाजिक राजनीतिक प्रतिबिम्ब दृष्टीगत होता है।
3. इरान की रोचक कहानियाँ निजामी असार आदि की फारसी की कहानियों का हिन्दी में अनुवाद 1980.
4. किस्सा जाम का इरानी लोक कथाओं का अनुवाद मुल लेखक फारसी के मोहसिन मुहम्मद दुस्त 1977.
5. काली छोटी मछली-ईरानी लेखक समर बहरंगी की फारसी भाषा में लिखित कहानियों का हिन्दी में अनुवाद 1984.
6. व्हियतनाम की लोक कथाएँ 1985.
7. बरनिंग पैयर सैद सुल्तानपुर की ईरानी क्रान्ति पर लिखित कविताओं का अनुवाद 1985.
8. शाहनाम फिरौसी-फारसी भाषा में लिखित फिरदौसी की कहानियों का अनुवाद 1990.
9. गुलिस्तान ए-सादी-सादी का रचनाओं का अनुवाद.
10. राजनीति पर आधारित ग्रन्थ।
11. मरजिना का देश इराक सन 2003 में नासिरा शर्मा ने अपने इराक यात्रा से सम्बन्धित कटु मार्मिक अनुभव व्यक्त किए है।
12. अफगानिस्तान बुजकशी का मैदान दो खण्ड सन् 1987.

1.8 लेख संग्रह

1. औरत के लिए औरत सन 2003. ईरानी क्रांति लिखना कथा संग्रह से आने से पूर्व लेख लिखना आरम्भ किया था, जो राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे। जैसे
2. इन्कलाब इन इरान, 24 दिसम्बर हिन्दुस्तार टाइम्स नई दिल्ली (अंग्रेजी) 1974.
3. ईरान टुडे, 8 फरवरी सन पत्रिका अंग्रेजी 1979.
4. खुनी फिजा से उभरता ईरान चार लेख 1980 .
5. इण्डियन एक्सप्रेस दिल्ली में अंग्रेजी 1980.
6. सारिका 1981 टाइम्स ऑफ इण्डिया हिन्दी पुश्नच 1982
7. हिन्दी राष्ट्र और मुसलमान सन् 2002 में प्रकाशित इस लेखसंग्रह में नासिराजी भारतीय मुसलमानों की स्थिति मानसिकता स्त्रियों की अवस्था एवम् समसामायिक समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। किताबों के बहाने सन् 2002 में प्रकाशित ग्रंथ में विभिन्न विषयों पर लेख लिखे हैं।

1.9. बालसाहित्य

1. संसार अपने-अपने हिन्दी में
2. अपनी अपनी दुनिया उर्दु में
3. किस्सा ए गुसाई माँ पर्शियन में 1980
4. नंदन चंपक मनस्वी पत्रिकाओं में लगभग 500 बाल कहानियाँ प्रकाशित
5. मरमेड एण्ड ब्रोकन जार मौलिक रूप में अंग्रेजी में लिखित 1980

9 सम्पादित ग्रंथ

1. क्षितिज पार सन् 1988 यह राजस्थानी लेखकों द्वारा लिखित लघुकथाओं का संकलन है।
2. वर्तमान साहित्य पत्रिका महिला विशेषांक सन् 1994
3. सारिका सन् 1981 ईरानी क्रांति विशेषक
4. पुर्नश्च पत्रिका ईरान विशेषांक

1.10 टेली फिल्में

लेंखिका ने भारतीय दूरदर्शन के लिए टेली फिल्मों का लेखन किया है। जैसे

1. आया बसन्त सखी लखनऊ के चिकन का काम करने वालों पर आधारित निर्देशक मुजफ्फर अली 1985
2. काली मोहिनी महाराष्ट्र के चीकू के बागों में काम करने वालों पर आधारित निर्देशक मुजफ्फरनगर अली 1985

3. समेल का दरख्त कामकाजी महिलाओं पर आधारित निर्देशक मुजफ्फर अली
4. सबीना के चालीस चोर नाटक 1992
5. फ्रान्सीसी दुरदर्शन के लिए ईरान इराक युद्ध पर फिल्म

1.11 रिपोर्ताज

जहाँ फव्वारे लहु होते है। सन् 2003 इसमें नासिरा शर्मा ने अपनी ईरान इराका यात्रा तथा अनेक अनुभवों के साक्षात्कार संकलित किए है।

1.12 साक्षात्कार

नासिरा शर्मा ने देश-विदेश की कई महान विभुतियों से साक्षात्कार लिए हैं।

1.13 पुरस्कार

1. पत्रकार स्त्री पुरस्कार प्रतापगढ से।
2. अपूर्ण सम्मान हिन्दी अकादमी दिल्ली से।
3. गजानन माधव मुक्तिबोध राष्ट्रीय पुरस्कार भोपाल से।
5. महादेवी वर्मा पुरस्कार बिहार राजभाषा से।
6. कीर्ति सम्मान हिंदी अकादमी दिल्ली से।
7. इंडो रशियन पुरस्कार बालसाक्षरता के लिए रशिया से।

1.14 निष्कर्ष

नासिरा शर्मा व्यक्तित्व कुल मिलाकर प्रभावशाली, आकर्षक एवं धीर गंभीर प्रतीत होता है। नासिरा जी के व्यक्तित्व निर्माण में उनका परिवार परिवेश तथा उनके अपनी सोच जो वे जीवन के प्रति स्पष्टता से रखती है इन सभी का प्रभाव रहा है। नासिरा जी हिन्दी कथा साहित्य की महत्वपूर्ण एवं उभरती हुई लेखिकाओं में से एक है। उन्हें बचपन से ही लेखन कार्य में रूचि है। उन्हें अपने परिवेश और परिवार से साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली, अर्थात नासिरा शर्मा के कृतित्व में उसका प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। उनका साहित्य बहु आयामी रहा है। उच्च शिक्षित, आधुनिक सोच विभिन्न देशों की यात्रा करने के बावजूद नासिरा जी अपनी भारतीय संस्कृति सभ्यता नहीं भुली, किन्तु गलत परम्परा रूढ़ियों को नहीं मानती है। नासिरा जी का राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय ज्ञान गजब का है। उनका साहित्य इतना प्रचुर और विविधवर्णी है, कि विश्वास नहीं होता है, कि पारिवारिक दायित्वों सामाजिक कठिनाअयों और लगातार आवाज ही के बाद समस्त देशों और सफलताओं के अंतविरोधों के बीच वे कैसे इतना सबकुल लिख लेती है। उपन्यास कहानी के अतिरिक्त बाल साहित्य, अनुवाद कार्य, संपादन लेख, पटकथा लेखन, रेडियों लेखन, टी0वी0 फिल्स लेखन, टी0वी0 साक्षात्कार और विभिन्न देशों के प्रमुख राजनयिकों के साक्षात्कार आदि कार्य उन्होंने सफलतापूर्वक किए है।

सन्दर्भ सूची

1. अक्षर दर्पण शब्दकोश रजनीकांत जोशी पृ0 85
2. आ0 क्षेमचन्द्र नई दिल्ली 1992
3. नासिरा शर्मा प्रथम कहानी संग्रह के भूमिका में पृ0 14
4. नासिरा शर्मा पत्थर गली कहानी संग्रह राजकामल प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ 165
5. नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन पृ0 17
6. नासिरा शर्मा कहानी समग्र भाग 2 किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण पृ0 385
7. नासिरा शर्मा एक मूल्यांकन पृ0 74
8. डॉ0 सुषमा कोंडे अल्पसंख्यकों का विचारविश्व पृ0 185

Vol. 13 No. 75, March 2021 ISSN : 0975-1386

Wesleyan Journal of Research

An International Research Journal

HUMANITIES, SOCIAL & APPLIED SCIENCES

Multidisciplinary | Peer Reviewed | Refereed

UGC Care Listed

Bankura Christian College
Bankura-722101
WEST BENGAL, INDIA

ISSN:0975-1386

Wesleyan Journal of Research

An International Research Journal

Vol. 13 No. 75

HUMANITIES, SOCIAL & APPLIED SCIENCES

Multidisciplinary | Peer Reviewed

Bankura Christian College

Bankura, West Bengal, India

March, 2021

Wesleyan
Journal of Research

Vol. 13 No. 75 March 2021 (ISSN: 0975-1386) | Impact Factor 2021: 6.58

UGC Care Listed

Articles

1. **Development of Tourism Industry of Assam in Post COVID-19 Pandemic Period** **01-10**

   Author(s) By :- Antara Dutta

2. **Saurabh Kumar Caliha's 'Ghulam' as a Satirical Assamese Short Story : A Review** **11-17**

   Author(s) By :- Purbalee Gohain

3. **Dam, Land Alienation and its Impact on the Affected Families: A Case Study of KarbiLangpi Hydroelectric Dam Project** **18-29**

   Author(s) By :- Baba Chandra Singha

4. **Insurgency in Northeast India: A Stumbling Block for India's tie with South East Asia in the Way of Development** **30-38**

   Author(s) By :- K. Joy Kumar Singh

5. **Potentialities of the Tourism Industry in the Foothill Zone of South Kamrup: A Case Study of Chandubi Lake** **39-48**

   Author(s) By :- Nibedita Das[1], MalabikaKalita[2] and RitusmitaGautam[3]

6. **Foreign Direct Investment and Economic Development** **49-56**

   Author(s) By :- Subhas Ch Barman

7. **The Study Of Pollution And Chemical Analysis And Its Impact On The Water Quality Of River Sone, Western Bihar** **57-68**

   Author(s) By :- Vinod Kumar Singh

8. **Impact of Learning Style on Academic Achievement** **69-76**

   Author(s) By :- Mrs. M. Maria Jeslin[1] and Dr. K. R. Selvakumar[2]

9. **Dalit Saahitya ki Vaicharikì ka Aadhar** 77-80

Author(s) By :- Dr. Vinod Meena

10. **Shekhawati Paryatan Sarkit kaa Paryavarneeya Paryatan ke vishesh sandarbh mei Adhyaan** 81-86

Author(s) By :- Dr. Lalit Singh Jhala[1] and Mahesh Kumar[2]

11. **Naasira Sharma ke Katha Saahitya kee Aadhunik Priprekshay mei Uplabdhiyan** 87-94

Author(s) By :- Professor Lata Sumant[1] and Rajesh Kumar Patel[2]

12. **Hindi Saahitya mei Maitreyi Pushpa ke Upannyason ka Shilp Vaishistya** 95-110

Author(s) By :- Professor Lata Sumant[1] and Pramod Kumar Singh[2]

नासिरा शर्मा के कथा–साहित्य की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उपलब्धियाँ

प्रोफेसर लता सुमन्त[1], राजेश कुमार पटेल[2]

[1]प्रोफेसर लता, सुमन्त शोध निर्देशिका, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

[2]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात

शोध सार: नासिरा शर्मा एक श्रेष्ठ साहित्यकार हैं। उनका साहित्य हिन्दी साहित्य की अक्षय निधि है। उनके साहित्य में समाज का वास्तविक रूप दिखायी पड़ता है। समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण बखूबी किया गया है। यदि देखा जाए तो नारी की स्थिति बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। नारी चित्रण में उनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। नारी की स्थिति को दयनीय बनाने वाले उन सभी कारणों को उन्होंने बड़ी ही निडरता से प्रस्तुत किया है। कहानी और उपन्यास में वर्णित नारी समस्याएँ संवेदनशील पाठक को झकझोर कर रख देती है। नासिरा शर्मा का लेखन क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। भारत के अतिरिक्त अन्य देशों फिलस्तीन, ईरान, इराक, तुर्की, सीरिया, इथोपिया, बंगालदेश जैसे देश भी इनकी लेखनी की परिधि में आते है। इनकी लेखनी का एक मात्र उद्देश विश्व मानव की पीड़ा और संवेदनाओं का निष्पक्ष विवेचन कर शान्ति और मित्रता का सन्देश देना है। उनकी कहानियों का भूगोल किसी शहर, प्रान्त और देशों की सरहदों में कैद नहीं है, बल्कि उनके पास, आर–पार और दूर–दूर तक देखने वाली दृष्टि है और यह दृष्टि सही मायनों में मानवीय है, भाई–चारे का पैगाम देने वाली है, 'विश्व मानवता' का इतिहास रचने वाली है। उनके अनुसार सबसे बड़ा धर्म इन्सानियत का है। भाषा, प्रान्त, धर्म, देश, सरहद यह सब तो मानव की कुण्ठाएँ हैं, एक–दूसरे को काटने का हथियार हैं। भाषा के स्तर पर जब लोककथनाओं के कदम आगे बढ़े तो उपन्यास और कहानी दिखाई देने लगी और आधुनिक रूप में स्थापित होने के साथ ही भौगोलिक सीमाओं को तोड़कर चारों ओर अपने छींटे बिखरेती नजर आने लगी। अपने तलुवों में धरती को छूती हुई कहानी, खेत–खलयानों से गुजरती जागीदारों के शोषण, साहूकारों के अत्याचार, मज़दूरों के आंसुओं का अहसास दिलाती, गाँव–नगर, महानगरों में विचरण करती हुई, परम्परागत आंगन में टीस, कसक, कुण्ठा–शोषण आदि के धरातल पर सुख–दुख के हमसफर किरदारों को जीवंतता प्रदान करने लगी। आधुनिकता बोध नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में पूरी तरह समाया हैं नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में मध्यम वर्ग की उस नारी की कहानियाँ हैं जो नारी त्रासदी एवं मनोवृत्तियों एवं मानसिकताओं के बीच से उभरती है।

मुख्य शब्द: मानवतावादी,अभिव्यक्ति,कुण्ठा–शोषण,साहूकारों के अत्याचार।

Article History

Received: 18/02/2021; Accepted: 12/03/2021

Corresponding author: प्रोफेसर लता सुमन्त

1.1 प्रस्तावना–हिन्दी महिला कथाकारों में उपन्यासकार और कहानीकार नासिरा शर्मा का स्थान महनीय है। वह एक विदुषी महिला हैं। नासिरा शर्मा की शोहरत राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है। उन्हें राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान ग़ज़ब का है। स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य की वह एक सशक्त लेखिका है। स्वतन्त्रता के बाद आज के दिन भी नई स्थितियों और बदलते जीवन मूल्यों का मनुष्य अनुभव कर रहा है। उसे नासिरा शर्मा ने अपने कथा साहित्य में बड़ी सहानुभूति एवं साहस के साथ अभिव्यक्ति दी है। एक मुस्लिम महिला होते हुए भी उन्होंने हिन्दी साहित्य में जो ख्याति प्राप्त की है बड़े गौरव की बात है। वे जातिगत भेदभाव और संकीर्णता से बहुत परे हैं। नासिरा शर्मा पूरी तरह से मानवतावादी हैं। वह हर वक्त सजग रहकर हर समस्या की जड़ तक पहुँचना चाहती हैं उन्होंने अक्सर अनेक मुद्दों पर खुली चर्चा की है।

1.1.1 व्यक्तित्त्व :

जन्म– श्रीमती नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त सन् 1948 में इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनके पिता प्रोफेसर ज़ामिन अली इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उर्दू भाषा के प्रोफेसर थे तथा माता श्रीमती नाज़नीन बेगम एक सफल गृहणी रही हैं। ये कुल मिलाकर पाँच भाई–बहन हैं। श्रीमती शर्मा एक पढ़े–लिखे शिया–मुस्लिम घराने से सम्बन्ध रखती हैं और इमाम नक़ी से सम्बन्धित होने के कारण इनका पूरा परिवार अपने नाम के बाद नक़वी लगाता है। इस सम्बन्ध में वे स्वयं कहती हैं–

"धर्म मेरा इस्लाम है और मैं शिया सय्यद घराने से हूँ। इमाम नक़ी से हमारा सिलसिला है। इस कारण पूरा परिवार नाम के बाद नकवी लगाता है।"

1.1.2 परिवार–श्रीमती नासिरा शर्मा के बड़े भाई सय्यद मुहम्मद हैदर अंग्रेजी साहित्य का अध्यापन कार्य करते हैं और दूसरे भाई सय्यद मज़हर हैदर एक पत्रकार हैं। नासिरा शर्मा की साहित्य में रुचि का कारण सम्भवतः पारिवारिक वातावरण ही हैं। माता जी के अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी रूप में साहित्य लेखन से जुड़े हुए हैं। आपकी दोनों बहनें भी लेखन–कार्य में रुचि रखती हैं।

1.1.3विवाह–श्रीमती नासिरा शर्मा का विवाह मात्र उन्नीस वर्ष की आयु में श्री रामचन्द्र जी के साथ हुआ। श्री रामचन्द्र शर्मा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में भूगोल के प्रोफेसर थे। गत वर्ष श्री शर्मा जी का देहवासान हो गया। आपके पारिवारिक जन इस विवाह के पक्ष में न होने के कारण विवाह में सम्मिलित नहीं हए। दो विरोधी धर्मों के लोगों का विवाह हमारे समाज समाज गें आज भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता है। अतः स्वाभाविक था कि इस युगल को इस प्रकार की समस्याओं से जूझना ही था, किन्तु आपने इसकी ज़रा चिन्ता न की और अपने प्रेम को पाने के लिए पूरे समाज से टक्कर ली। उनकी दृष्टि में लोग धर्म को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं, जबकि सबको चलाने और जीवित रखने वाली शक्ति

एक है। वह कहती हैं :–**"धर्म केवल योजनाबद्ध तरीके से जीवन जीने का एक रास्ता है। आज धर्म को समझना हमारे लिए बेहद जरूरी हो जाता है क्योंकि उसका गलत प्रयोग इन्सानों की जिन्दगी को बेहद दुश्वार बना रहा है।"**

स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त देश की स्थिति के साथ–साथ नारी की स्थिति में भी सुधार आने लगा। उसने भी अपने व्यक्तित्व के विकास का प्रयत्न किया और वह साहित्य के अतिरिक्त समाज के अन्य विविध कार्य क्षेत्रों में भी कार्यरत होने लगे। स्वातन्त्रोत्तर कथा लेखिकाओं में महत्वपूर्ण नाम ऊषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, रजनी परिकर, शिवानी, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, शशि प्रभा शास्त्री, कृष्णा अग्निहोत्री, दीप्ति खण्डेलवाल, सूर्य बाला, मालती जोशी, मृदला गर्ग, मृणाल पाण्डे,.चित्रा मुदगल, राजी सेठ, आदि में नासिरा शर्मा का नाम सर्वोपरि है।

नासिरा शर्मा का सन् 1987 में प्रकाशित उपन्यास 'शाल्मली' आज पच्चीस–छब्बीस साल बाद भी पहले जैसी ताज़गी लिये हुए है और पठनीय बना हुआ है। नासिरा शर्मा के उपन्यास 'शाल्मली' में शाल्मली एक आधुनिक शिक्षित और उच्चपद पर काम करने वाली महिला है जिसें घर में पति की उपेक्षा, उलाहना, अपमान और शंकाओं का सामना करना पड़ता है। शाल्मली एक आधुनिक शिक्षित और उच्चपद पर काम करने वाली महिला है जिसे घर में पति की उपेक्षा, उलाहना, अपमान और शंकाओं का सामना करना पड़ता है। शाल्मली इसमें परंपरागत नायिका नहीं है, बल्कि वह अपनी मौजूदगी से यह अहसास जागती है कि परिस्थितियों के साथ व्यक्ति का सरोकार चाहे जितना गहरा हो: पर उसे तोड़ दिए जाने के प्रति मौन स्वीकार नहीं होना चाहिए। 'शाल्मली' सेमल के दरख्त की तरह है, जिसका अंश–अंश संसर्ग में आने वाले को जीवन–दान करता है: लेकिन उसका पति नरेश इस सच को स्वीकार करने की जगह अपनी कुंठाओं में जीता है, अपने स्वार्थों को शाल्मली के यथार्थ आचरण से ऊपर समझता है। वह हिसाबी–कितबी जीव है। लेकिन जिन्दगी की सच्चाई के साथ उसका समीकरण गलत है। शाल्मली एक बड़ी अफसर है। बावजूद इसके वह बेहद सामान्य है। पति, माता–पिता और सास के साथ उसके रिश्ते सच के नजदीक है। यही उसकी खूबी है कि वह 'नौकरशाह' होते हुए भी, उस वर्ग से कटी हुई है और एक आम भारतीय नारी के यथार्थ को जीती है।

नासिरा शर्मा ने 'ठीकरे की मंगनी' के माध्यम से हिन्दी साहित्य को महरूख जैसा अद्वितीय और मौलिक पात्र दिया हैं महरूख का जीवन उन स्त्रियों के जीवन का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी मुक्ति को अकेले में न ढूँढकर समाज के उपेक्षित निम्नवर्गीय, संघर्षरत, शोषितों पात्रों से जोड़कर मुक्ति के प्रश्न को व्यापक बना देती हैं नासिरा शर्मा का यह एक ऐसा उपन्यास है। जिसमें महरूख की दास्तान के माध्यम से दो खिड़कियाँ खुलती है, जिसमें एक गाँव है, वहाँ का स्कूल है, गाँव के असहाय लोग हैं, जिनके छोटे–छोटे दुखों से भी वह विचलित हो उठती है। दूसरी तरफ एक परम्परागत मुस्लिम खानदान है उसमें रह रहे

लोगों के अपने-अपने सरोकार और टकराव हैं। इन दोनों ही परिवेशों से गुजरते हुए महरूख बदहवास दुनिया को सच्चे अर्थों में पड़ताल करती है और चुनती है। अपने लिए उस थरथराते दुनिया को सच्चे अर्थों में पड़ताल करती है और चुनती है अपने लिए उस थरथराते सत्य को, जो उसे अकेला तो कर देता है, पर सशक्त ढंग से खड़ा होना सिखा देता है। औरत को जैसा होना चाहिए, उसी की कहानी यह उपन्यास कहता है।

भारत-पाक विभाजन, उसके कारण चुभती आन्तरिक-बाहरी समस्याएँ पलायनकारियों के कष्ट और नागरिकों की दो देशों में बँटी जिन्दगी- जैसी समस्याओं जिन पर बहुत कम लिखा गया है, फिर भी नासिरा शर्मा न अपनी लेखनी चलाई है। जैसे- 'जिन्दा मुहावरे' नामक उपन्यास में निज़ाम भारत में पलायन कर पाकिस्तान तो भाग जाता है और काफी धन भी कमाता है। किन्तु उसको मानसिक शान्ति और सुख नहीं मिलता, उसका शरीर पाकिस्तान में और मन भारत में भटकता रहता है। नासिरा शर्मा ने गहरे उतर कर भारत में रहने वाले मुसलमानों की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जिन्दगी को टटोलती है। इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि है लेखिका की साफगोई और ईमानदारी। उन्होंने पूरी तटस्थता के साथ स्थितियों का विश्लेषण किया है।

'अक्षयवट' हिन्दी की प्रख्यात कथा लेखिका नासिरा शर्मा का नवीनतम उपन्यास है। दरअसल 'अक्षयवट' प्रतीक है। उस अविराम भावधारा का, उस अक्षर विरासत का, जिसका शहर इलाहाबाद की धमिनियों में निरन्तर विस्तार लिए हैं नासिरा शर्मा के इस 'अक्षयवट' उपन्यास में इलाहाबाद शहर अपने सारे नये-पुराने चटक-मद्धिम रंगों और आयामों के साथ जीवन्त रूप में उपस्थित है। इसमें श्चाहर की धड़कन में रची-बसी ऐसी सुचा जिन्दगियों की मर्मस्पर्शी कहानी है जो विरासत में मिली तमाम उपलब्धियों के बावजूद वर्तमान व्यवस्था की सड़ाँध और आपाधापी में अवसाद-भरी जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त हैं निसन्देह नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास में माध्यम से जीवन की गहन जकड़न और समय की विसंगतियों को पहचानने और उनसे मुठभेड़ करने की कोशिश की है। वास्तव की विसंगतियों, को पढ़ना एक बनती-बिगड़ती और बदरंग होती सभ्यता से साक्षात्कार करना भी है।

जल की इसी ज्वलंत समस्या को लेकर अंतर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त लेखिका नासिरा शर्मा ने इस उपन्यास 'कुइयाँजान' का रोचक ताना-बाना बुना है। उन्होंने एक बड़ी सी सरस गाथा के साथ जीवंत चित्र उकेरे हैं। इसके पात्रों की अनंत जिजीविषा की भाँति समूची कथा-काया में सरस्वती की अंतर्धारा की भाँति जल-गाथा भी प्रवाहित होती रहती है। 'कु इयाँजान' उपन्यास में विदुषी लेखिका ने छिछले रोमांस अथवा अश्लीलता से परे जीवन की गहराइयों में झांककर वह अद्‌भूत कथा प्रस्तुत की है। जो पग-पग पर हमें रोमांचित करती है। जीवन में परम स्रोत जल की गाथा को बड़े ही सशक्त कथानक में इस प्रकार बुना है जो पाठक को पूरी तरह सराबोर कर देता। दुनिया भर में छाया जल संकट हमारी चिन्ताओं का प्राथमिक

कारण बन गया है। नासिरा शर्मा का 'कुइयाँजान' वास्तवर में एक साथ पानी का अतीत और भविष्य दोनों का दस्तावेज है।

जीरों रोड़'' उपन्यास का कथनाक इलाहाबाद के ठहरे और पिछले मोहल्ले 'चक' से शुरू होकर दुबई जैसे अत्युधनिक व्यापारिक नगर की रफतार की ओर हमें ले जाता है। यह वह नगर है जहाँ लगभग सौ राष्ट्रो के लोग अपनी रोजी–रोटी कमाने के लिए रेगिस्तान में जमा हुए हैं। दरअसल ये अपनी मर्जी से यहाँ नहीं आये हैं बल्कि अपने हालात से जमा हुए है। दरअसल ये अपनी मर्जी से यहाँ नहीं आये हैं बल्कि अपने हालात से उखड़े वे लोग है जो बम–संस्कृति से खदेड़े गये हैं, निराश्रित है और अपने ख्वाब एवं ख्याल को ढूँढते, फिर से जीने के लिए कमर कसे हैं संसार मानचित्र पर खड़े विभिन्न देश, भाषा, रंग के लोग एक ही अनुभव से गुजर रहे हैं। सबके अन्दर एक ही राग है। जिसे पीड़ा कहा जा सकता है और उसी पीड़ा को पकड़ने की कोशिश नासिरा जी ने इस उपन्यास में की है जो किसी का नहीं, सबका सच है– जीरो रोड़।

1.1.4 **'बहिश्ते–ज़हरा'** उपन्यास ईरानी क्रान्ति पर लिखा विश्व का पहला ऐसा उपन्यास है जो एक तरफ पचास साल पुराने पहलवी साम्राज्य के उखड़ने और इस्लामिक गणतंत्र के बनने की गाथा कहता है ईरान राजनैतिक और सांस्कृतिक की विशेषज्ञ होने के कारण उन्होंने ईरान क्रान्ति, वहाँ की परिस्थितियाँ, रहन–सहन युवा–वर्ग, दोहरा जीवन जीती नारी, उसके संवेदनाओं पर विशेष रूप से अपनी लेखनी चलाई हैं नासिरा शर्मा ईरान राजनैतिक, सांस्कृतिक सन्दर्भों को लेकर मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं का ही वर्णन करती है। इसके अतिरिक्त वर्षों से चले रहे हैं, इस्त्रायली– फलस्तीन संघर्ष, ईरान–इराक युद्ध, ईरान का अरब विरोधी होना, अफगानिस्तान आदि पर अपनी विचारधारा व्यक्त कर लेखिका का अरब विरोधी होना, अफगानिस्तान आदि पर अपनी विचारधारा व्यक्त कर लेखिका ने केवल मानव–मात्र की पीड़ा का चित्रण किया है, जो पूरे विश्व में एक जैसा है, उसकी दो आँखे, दो कान, दो हाथ हैं। वह प्रत्यक्ष रूप से हर जगह एक सा है।

नासिरा शर्मा की कहानियों में तपाए हुए कंचन की आब है। उनका गद्य गंभीर है। संवेदना के स्पंदन से उद्देलित है। नासिरा शर्मा का 'शामी कागज' कहानी भी विधवा समस्या पर आधारित है। नायिका पाशा का मन दूसरे पुरूष को स्वीकार नहीं कर सकता। 'खुशबू का रंग' की नायिका अपना सारा जीवन मृत प्रेमी की यादों के सहारे जीती है। 'मिश्र की ममी' की नायिका को पति से सन्तान प्राप्ति न हुई तो इस इच्छा को लेकर अपने पूर्व प्रेमी के पास चली जाती है। 'दादगाह' कहानी का नायक अकबर आजीवन अविविाहित रहने का प्रण करता है। प्रेम, क्योंकि उसके अनुसार विवाह एक सामाजिक सम्बन्ध है जो वास्तव में एक–दूसरे का शील भंग करने का अच्छा तरीका है। वह आवश्यकता पड़ने पर भी अपनी किसी महिला मित्र के पास जाकर अपने तृष्णा का समाधान कर लेता है। इसी प्रकार 'औबे–तौबा' कहानी का शमशाद भी लगभग पचास महिलाओं के सम्पर्क में आ चुका है। 'मुटठी भर धूप' की रेखा का विवाह दहेज के अभाव के

कारण ही एक दरिद्र परिवार में होता है। उस नई–नवेली दुल्हन को अपने ससुराल की आर्थिक स्थिति सुधार के लिए विदेश में नौकरी करनी पड़ती है ताकि वह हर माह उन्हें पैसे भेज सके। विवाह के पहले माह ही उसे पाँच वर्ष के लिए पति से अलग कर दिया जाता है।

'पत्थर गली' के माध्यम से नारी अस्मिता, उसके जीवन बिम्ब, रिश्तों की बेबसी, संबंधों का स्थायित्व, स्वार्थपरता, आत्मीयता का अभाव, बाजार के से उतार–चढ़ाव की जिन्दगी, उदासियों का अंधेरापन और कहीं कोई रोशनी की लकीर–सी निर्बाध बहती हंसी.... जो नारी जीवन की लंबी–लंबी गलियों से गुजरती, आंसू, दर्द, उत्पीड़न और शोषण का चिलमनों से सरकती हुई कागज के बदन को स्पर्ष करती है। 'पत्थर गली' में एक बालिका खुलकर जीना चाहती है उसका जीवन इतने बन्धनों और मर्यादाओं में जकड़ा है कि वह घुटकर मानसिक सन्तुलन खो बैठती है।

'संगसार' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ ईरान की क्रान्ति के दौरान उपजी मानवीय पीड़ा का बयान है। पाठक अपनी तरह के दिल व दिमाग रखने वाले दूसरे इन्सानों की कहानियाँ पढ़कर अपनी साझी मानवीय विरासत के आईने में उसके दुख–सुख में अपना चेहरा देख पाने में सफल हो सकेंगे। जो दूसरे देश्चा में रहकर भी हमारी तरह एक दिल, एक दिमाग, दो आँख, दो हाथ–पैर रखने वाले इन्सान हैं।

'इब्ने मरियम' कहानी संग्रह की सारी कहानियाँ एक विशेष स्थिति की हैं जिसमें फँसा इन्सान जीने के लिए छटपटाता है। कभी उसका यह संघर्ष अपने अधिकार को पाने के लिए होता है। तो कभी समाज को बेहतर बनाने के लिए करता है। जिसमें इतिहास के दरीचे खुले हुए थे। 'इब्ने मरियम' कहानी संग्रह की प्रत्येक कहानी इंसान संघर्ष की दास्तान बयाँ करती है। भारत, युगांड़ा, फिलिस्तीन, इथोपिया, अफगानिस्तान, सीरिया, स्कॉटलैण्ड, बांग्लादेश, कनाड़ा, इराक, टर्की और पाकिस्तान की भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियाँ किन्तु संवेदना का धरातल एक ही इन्सानी संघर्ष छटपटाहट एक जैसी भूख, गरीबी, बदहाली, सत्ता पक्ष को वर्चस्ववादी नीति जिसके पैरों तले रौंद दी गई मनुष्य की पहचान, मनुष्यता का अधिकार। यही कारण है कि 'इब्ने मरियम' की ये कहानियाँ इंसानी संवेदनाओं को पूरी प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करती है।

'सबीना के चालीस चोर' कहानी संग्रह की कहानियों के कथा–सूत्रों में बुनियादी विचारों का समावेश है। सबीना एक छोटी लड़की है, जो बड़ों जैसी दृष्टि और समझ रखती है। उनका मानना है कि फसाद कराने वाले, दूसरों का हक मारने वाले ही चालीस चोर हैं जो हमेशा कमजोर वर्ग को दबाते हैं। इसी सबके बीच बार–बार अपने होने का अहसास दिलाती छोटी–छोटी मगर समझदार लड़कियाँ समूचें संघर्ष का हिस्सा है। अलग–अलग कहानियों में अलग–अलग किरदार निभाती सबीना से लेकर गुल्लों, सायरा, चम्पा, मुन्नी जैसी लड़कियों में नासिरा शर्मा खुद को ही प्लांट करती है। दर्द की बस्तियों की ये कहानियाँ जिस भारतीय आबादी का प्रतिनिधित्व करती है वही इस देश की बुनियाद है। ये कहानियाँ हिन्दुस्तान की सच्ची तस्वीर

हैं, जिनका अंतर्संगीत इनके कथानकों के तारों से छिपा है जिन्हें ज़रा–सा छेड़ों तो मानवीय करूणा का अथाह सागर ठाठें मारने लगता है।

नासिरा शर्मा का कहानी संग्रह 'खुदा की वापसी' के दो अर्थों में लिया जा सकता है– एक तो यही कि यह सोच अब जा चुकी है कि पति एक दुनियावी खुदा है और उसके आगे नतमस्तक होना पत्नी का परमधर्म है और दूसरा है उस खुदा की वापसी, जिसने सभी इन्सानों को बराबर माना और औरत–मर्द को समान अधिकार दिये है। इस संग्रह की कहानियों को बराबर माना और औरत–मर्द को समान अधिकार दिये हैं। इस संग्रह की कहानियों में ऐसे सवालों के इशारे भी हैं कि जो हमें उपलब्ध है। उसे भूलकर हम उन मुद्दों के लिए क्यों लड़ते हैं। जिन्हें, धर्म, कानून, समाज परिवार ने हमें नहीं दिया? जो अधिकार हमें मिलता है। जब उसी को हम अपनी जिन्दगी में शामिल नहीं कर पाते और उसके बारे में लापरवाह रहते हैं, तब किस अधिकार और स्वतन्त्रता की अपेक्षा हम खुदा से करते है। 'खुदा की वापसी, की सभी कहानियाँ उन बुनियादी अधिकारों की माँग करती नजर आती है। जो वास्तव में महिलाओं को मिले हुए है। मगर पुरूष–समाज के धर्म पण्डित मौलवी मौलिक अधिकारों को भी देने के विरोध में हैं, 'खुदा की वापसी' की कहानियाँ एक समुदाय विशेष का होकर भी विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है।

'इन्सानी नस्ल' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ बड़ी सादगी से जीवन मे यथार्थ को सामने रखती है। मानवीय संवेदना और बुद्धि का तर्क जाल का द्वन्द्व के रूप में निरन्तर टकराता हुआ इन कहानियों की अन्तर्धारा को एक–अलग पहचान भी देता है। इन कहानियों में प्रेम का एक निर्मल संसार भी देखने को मिलता है। प्रेम का यह संसार दाम्पत्य जीवन का प्रेम भी है, जहाँ अलग–अलग धर्म के स्त्री–पुरूष, पति–पत्नि का सम्बन्ध स्वीकार करते है।

विश्व में फैले आतंक, फसाद, पलायन प्रेम, अपनापन, भावनाओं की बात कर नासिरा शर्मा एक आम व्यक्ति तक यही बात पहुँचाना चाहती है कि मानव एक देश और जन्मभूमि की तंग परिधि से निकल एक ही जाए। हम ईरानी हें, हिन्दुस्तानी हैं, अफगानी हैं, पाकिस्तानी है, इंगलिस्तानी हैं? आखिर क्यों नहीं हम सिर्फ इन्सान हो जाएँ, जिनका रिश्ता धरती से है, आसमान से है, अपने पेट से है। नासिरा शर्मा के साहित्य में छिपे सन्देश को उनके साहित्य को सरसरी नजर से देखकर नहीं ढूँढा जा सकता है। इसके लिए कए बुद्धिजीवी, एक संवेदनशील व्यक्ति की नजर की आवश्यकता है और इस बात को लेखिका स्वयं भी मानती हैं मानवता का सन्देश देने वाले कथाकारों की आज के युग में बहुत आवश्यकता है। आशा है नासिरा शर्मा अपने साहित्य के प्रकाश से दीर्घ काल तक मानव जाति का पथ–प्रदर्शन करती रहेगी।

1.2निष्कर्ष :

नासिरा शर्मा का कथा साहित्य में जितना योगदान है उंतना ही योगदान साहित्येत्तर लेखन में भी है। समाज के गूढ़ अन्तर्विरोधों को आपने न केवल कहानियों, उपन्यासों में उकेरा है बल्कि आपने

साहित्येत्तर लेखन में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है आपके साहित्य में एक ओर जहाँ मानवीय मूल्य एवं सरोकारों की गूढ़ संरचना होती है तो वहीं दूसरी ओर आमजन के पक्ष में खड़े होकर आवाज को बल देने क सूत्र भी मौजूद हैं। नासिरा शर्मा हमारी नवसाक्षर साहित्यमाला सलाहकार की सदस्या हैं। नासिरा शर्मा हमारी नवसाक्षर साहित्यमाला सलाहकार की सदस्या हैं। नासिरा 'शर्मा मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करने वाली लेखिका हैं। पूरे संसार में फैला आतंक उन्हें खटकता है और इस चीज से दुखी होकर वह मनुष्य को शान्ति का पाठ पढ़ाना चाहती है। वे अन्य लेखिकाओं से हट कर लिखती हैं। 'मुझे पढ़ने वाले' पसन्द करने वाले वरिष्ठ बुजुर्ग बुद्धिजीवी वर्ग है या फिर नई पीढ़ी जो जिन्दगी की विषमताओं को देख रही हैं।

संदर्भ

1. डॉ. जाहिदा जबीन, नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007, पृष्ठ–9.
2. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली , 1998, पृष्ठ–9.
3. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली , 1998, पृष्ठ–9.
4. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली , 1998, पृष्ठ–8.
5. डॉ. जाहिदा जबीन, नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में संवेदना एवं शिल्प, निर्मल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007, पृष्ठ–10.
6. नासिरा शर्मा, जितना मैंने जाना, डॉ. सुदेश बत्रा, वाङ्मय, त्रैमासिक डॉ. एम. फ़ीरोज अहमद, अलीगढ़, जून 2009, पृष्ठ–41.
7. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली , 1998, पृष्ठ–10.
8. नासिरा शर्मा, खुदा की वापसी, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली , 1998, पृष्ठ–8.
9. नासिरा शर्मा, जीरो रोड में दुनिया की छवियाँ : फजल इमाम मल्लिक, वाङ्मय त्रैमासिक, डॉ. एम. फीरोज अहमद, अलीगढ़ जून 2009, पृष्ठ–74.
10. नासिरा शर्मा, पत्थर गली के फ्लैप से, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृष्ठ–3.
11. नासिरा शर्मा, नासिरा शर्मा का कहानी संग्रह, पत्थर गली के फ्लैप से, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृष्ठ–3.
12. नासिरा शर्मा, नासिरा शर्मा का कहानी संग्रह, पत्थर गली के फ्लैप से, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृष्ठ–3.
13. नासिरा शर्मा, नासिरा के 'अफगानिस्तान : बुजकशी का मैदान' भाग एक, सरस्वती प्रेस, 1990.
14. नासिरा शर्मा, नासिरा के 'बुजकशी का मैदान' भाग एक देश और क्रान्ति, सरस्वती प्रकाशन, दिल्ली, 1990, पृष्ठ–8.